SAMETI H.P.

SAMETI H.P.

NEWS LETTER

State Agricultural Management & Extension Training Institute
Mashobra Shimla - 171007 HIMACHAL PRADESH

Issue : January 2014 to March 2014

Training programmes on Group Mobilization and Record Keeping

Under the flagship programme Rashtriya Krishi Vikas Yojana, Department of Agriculture and Cooperation, Govt of India has launched Central Sponsored Scheme Vegetable initiative for urban clusters. The scheme has also been launched in the state of Himachal Pradesh being implemented by the Department of Agriculture, HP. Main objectives of scheme are:

(a) Addressing all concerns related to both the demand and supply side of the vegetable sector in selected cities.

(b) Enhancing vegetable production and productivity, improve nutritional security and income support to vegetable farmers.

(c) Encouraging establishment of an efficient supply chain thereby leading to employment opportunities and incomes for intermediate service providers, and safe, good quality, fresh as well as processed agri produce at competitive price for urban consumers.

(d) Promote, developing and disseminating technologies for enhancing production and productivity of vegetables in peri-urban areas of major cities.

(e) Assisting states in addressing the entire value chain, right from the stage of pre-production to the consumers table through appropriate interventions.

(f) Creating employment generation opportunities for skilled and unskilled persons, especially unemployed youth.

To meet out the objectives of the scheme, a very important component is the promotion of farmer groups and their capacity building. According to the guidelines, the HRD training of the group members and leaders of the clusters formed under this scheme has to be conducted to make the groups viable and maintain their efficiency to meet the objectives of the programme To meet out this specific objective the SAMETI organized eleven training programmes for the group farmers and their leaders representing the district of Shimla and mandi. The ten number training programmes were organized for cluster/group of 10 blocks of the District Shimla namely, Mashobra, Basantpur, Theog, Narkanda, Rampur, Chopal, Jubbal, Chirgaon, Rohru in the month January & March in which total 337 farmers participated. One training programme was also organized for the farmers belonging the cluster from Karsog block of the District Mandi in which 30 farmer group members participated The training programmes stressed on the issues related to group stability and sustainability and record keeping in the groups.

Training programmes on various aspects of seed

In broad sense, seed is a material which is used for planting or regeneration purpose. However scientifically, Seed is a fertilized

matured ovule together covered with seed coat is called seed or it is a propagating material i.e., part of agriculture, sericulture, silviculture and horticultural plants used for sowing or planting purpose.

However, from the seed technological point of view seed may be defined as sexually produced matured ovule consisting of an intact embryo, endosperm and or cotyledon with protective covering (seed coat). It also refers to propagating materials of healthy seedlings, tuber, bulbs, rhizome, roots, cuttings, setts, slips, all types of grafts and vegetatively propagating materials used for production purpose. Agriquest. info)

Seed is crucial and basic input to increase crop yields per unit area. The importance of seed in crop production is known to human being since Vedic period. There is clear mention in ancient literature yajarveda "May the seed viable, may the rains plentiful and may the grains ripe days and nights"Only seeds of assured quality can be expected to respond to fertilizer and other inputs in expected manner, otherwise see of hope may turn into seed of frustration.

Among the inputs used by farmers seed in the cheapest input. It is basic inputs and forms small part of the total cost of cultivation. The good seed also increase the efficiency of the fa ctor of crop production.(agriinfo.in)

Quality Seed is having all those attributes, which differentiate the seed from grain. The important attributes which decide the seed quality include the genetic identity and purity; physical or mechanical purity; moisture content; germination, vigour and health. In addition, good quality seed should be of uniform size, having good luster and must conform to the prescribed standards for the above mentioned parameters.

To guaranty all this quality characteristics in the world wide seed trade it is absolutely necessary to have Uniformity in Seed Testing through Uniform Testing Procedures.

Underlying the importance and major role of seed in agriculture SAMETI organized three training programmes on seed itself viz., "Quality Control of Seeds" w.e.f 3-5 February,2014; "Seed Production Standards, Certification, Revalidation of seed" w.e.f 21-22 February 2014 in which seed inspectors from the various districts of the participated.

Also National Seed Research & Training Centre, Varnasi in collaboration with Sameti, Shimla organized three days regional workshop on "Seed Testing & Quality Regulation" w.e.f 25-27 March,2014 in which Seed Inspectors/Officers from the Department of Agriculture & Seed Certification Agencies of Himachal, Punjab & Haryana participated. The training was inaguarted by Dr. O.C Verma ,Director, HP State Seed & Organic Certification Agency and he also gave overview about the status of seed testing in India and seed regulations.

शैक्षणिक समिति की बैठक एवं वार्षिक प्रशिक्षण योजना कार्यशाला

समेति की वार्षिक प्रशिक्षण योजना हेतु शैक्षणिक समिति की बैठक एवं कार्यशाला का आयोजन 28 जनवरी, 2014 को किया गया जिसकी अध्यक्षता विस्तार शिक्षा निदेशक डाक्टर वाई एस परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन द्वारा की गयी | इस कार्यशाला में शैक्षणिक समिति के अन्य सदस्य भी मोजूद थे | कार्यशाला के दौरान कृषि एवं सम्बन्धित विभागों से आई प्रशिक्षण जरूरतों पर विस्तार से चर्चा की गयी तथा वर्ष 2014 के लिए (अप्रेल- दिसम्बर तक के लिए) वार्षिक प्रशिक्षण योजना को अंतिम रूप दिया गया | साथ ही निदेशक समेति को कृषि एवं सम्बन्धित विभागों से आई अतिरिक्त प्रशिक्षण जरूरतों एवं कोई ज्वलंत समस्या पर कार्यशाला या प्रशिक्षण आयोजित करने हेतु अधिकृत किया गया |

बाज़ार आधारित कृषि प्रसार

बाज़ार आधारित/ बाज़ार चालित कृषि प्रसार किसानों को उनके कृषि उद्यम से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए समर्थ बनाता है तथा कृषि प्रक्रियायों का विविधतापूर्ण ढांचा स्थानीय परिस्थितियो / कृषि प्रणालियों के लिए उपयुक्त होता है। किसानों को उत्पाद की गुणवत्ता, उपभोक्ता की पसंद, बाजार आसूचना, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन तथा विपणन सूचनाओं के विविध पहलुओं के बारे में जानकारी होना आवश्यक है। इससे कृषि समुदाय को उत्पाद के लिए उच्च कीमत हासिल करने, उत्पादन की लागतों को न्यूनतम बनाने तथा उत्पाद के मूल्य और उसकी विपणनात्मकता में सुधार करने में सहायता मिलेगी।

विस्तार कार्यकर्ताओं का ध्यान उत्पादन से आगे विस्तारित किए जाने की आवश्यकता है। इसी उदेश्य को मध्यनजर रखते हुए कृषि प्रसार अधिकारियों के लिए 6-7 फरवरी 2014 को एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 11 विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया।

पौध संरक्षण सामग्री की गुणवत्ता नियंत्रण

कृषि विकास में कृषि आदानों जैसे कि बीज, पौध संरक्षण सामग्री, रासायनिक खादों इत्यादि का विशेष महत्व है और अधिक उत्पादन अन्य बातों के इलावा उनकी गुणवत्ता पर भी निर्भर करता है। राज्य में जहां कृषि विभाग आदानों का वितरण करता है वहीँ अब ये कार्य सहकारी सभाओं व् व्यापारियों द्वारा भी किया जा रहा है किसानों को अच्छी गुणवत्ता की पौध संरक्षण सामग्री प्राप्त हों इसके लिए विभागीय अधिकारियों को उनकी गुणवत्ता बनाए रखने हेतु अधिनियमों एवम नियंत्रण आदेशों कि जानकारी होना अनिवार्य है समेति मशोबरा द्वारा एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का 21-22 फरवरी 2014 को आयोजन किया गया जिसमें 5 विभागीय अधिकारियों ने भाग

लिया प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अधिकारीयों को कीटनाशक अधिनियम **1968,** कीटनाशक आदेश **1986** व् कीटनाशक नियम बारे विस्तृत जानकारी दी गयी तथा विभिन्न पौध संरक्षण सामग्री के नमूने लेने व् परीक्षण हेतु प्रयोगशाला में भेजने बारे व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया

कृषि प्रसार प्रबंधन में स्नातकोतर डिप्लोमा (पी. जी. डी. ए. ई. एम.)

इस संस्थान में मैनेज हैदराबाद द्वारा प्रायोजित एक वर्षीय स्नातकोतर कृषि प्रसार एवं प्रबंन्धन डिप्लोमा करवाया जा रहा है। **2012-13** वर्ष में छटा बैच प्रारंम्भ किया गया, जिसके तहत 24 अधिकारी पंजीकृत किये गये हैं। द्वितीय समैस्टर की परीक्षा दिनांक **24-28 फ़रवरी 2014** को ली गई जिसमें **9** प्रशिक्षणार्थी परीक्षा में बैठे। इस डिप्लोमा से अधिकारीयों को कृषि प्रसार प्रबंन्धन व प्रौजेक्ट को सुचारु रुप से कार्यान्वित करने में विशेष मदद मिल रही है।

बीज परीक्षण एवम गुणवत्ता नियमों पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन

अधिसूचित बीज परीक्षण प्रयोगशालाओं में मौजूद बाधाओं का आकलन करने व उसमे अधिक सुधार के लिए तथा अपने अनुभवों और बीज परीक्षण में ज्ञान साँझा करने के लिए देश भर से बीज परीक्षण अधिकारी और बीज गुणवत्ता नियंत्रण अधिकारियों के साथ एक मंच पर बातचीत करने हेतु राष्ट्रीय बीज अनुसंधान और प्रशिक्षण केन्द्र, वाराणसी द्वारा प्रायोजित बीज परीक्षण एवम गुणवत्ता नियमों पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन **2 5 - 2 7** मार्च **2 0 1 4** को समेति मशोबरा में किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश के इलावा पंजाब व हरियाणा के अधिकारियों ने भी भाग लिया इस कार्यशाला के दौरान बीज परीक्षण के सिद्धांतों एवं प्रक्रियाओं व इसमें आने वाली कठिनाईयों पर विस्तार से चर्चा की गयी भारत में बीज परीक्षण और बीज गुणवत्ता नियमन पर भी चर्चा की गयी।

Other highlights of the quarter:

- Training programme on Organic Farming Certification w.e.f 11-13 February, 2014 for the SMS.ADO of the Department of Agriculture.
- Induction cum orientation training for the freshers of the Department of Agriculture w.e.f 10-12 March, 2014.
- PGDAEM Examination of the 2nd Semester for the 6th batch w.e.f 24-28 February, 2014.
- Training Programme on Soil & Water Conservation on arable land w.e.f 3-5 February, 2014 for the officers of the Department of Agriculture.

To _____

State Agricultural Management & Extension Training Institute,Mashobra Shimla - 171007
Email : sameti_director@yahoo.com, Website url : www.sametihp.com, Phones : 91-0177-2740240, 2740280